Poonam Shodh Rachna (ISSN 2456-5563)
(A Multidisciplinary, Peer Reviewed And Refereed Journal)
Vol.3, Issue.IX, September 2024, Pc: PSR-2409010

शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में वैश्विक मूल्य और राष्ट्रीय मूल्य

Ravinder Yadav
Ph.D., Dept. Of Education, Bhagwant University, Ajmer

Abstract

भारत एक ऐसा देश है जहां प्राचीन काल से ही शिक्षकों को अधिक महत्व दिया जाता रहा है। उन्हें समुदाय में सबसे बुद्धिमान व्यक्ति माना जाता है और उन्हें समाज की रीढ़ माना जाता है। शिक्षक शिक्षा प्रणाली में सबसे महत्वपूर्ण कारक है, जो उन मूल मूल्यों और सिद्धांतों को आयात करने पर ध्यान केंद्रित करता है जो व्यक्तियों के व्यवहार, दृष्टिकोण और निर्णय लेने की प्रक्रिया का मार्गदर्शन करते हैं।शिक्षकों का कर्तव्य केवल कक्षाओं तक ही सीमित नहीं है। उनकी समाज और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी है।उन्हें अपने छात्रों को ऐसे नागरिक बनने के लिए तैयार करके राष्ट्रीय मूल्यों के वास्तुकार की भूमिका निभानी होगी जो भविष्य में लोकतंत्र को संरक्षित और आकार देंगे और साथ ही अपने ज्ञान को अद्यतन रखते हुए, देश की समस्याओं को समझेंगे और उन समस्याओं को हल करने का एक ईमानदार प्रयासकरेंगे।शिक्षक शांति के लिए शिक्षा को एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय और वैश्विक मुद्दे के रूप में भी चित्रित करता है।यह पेपर वैश्विक मूल्योंऔरराष्ट्रीय मूल्यों के अर्थ, भारत में वैश्विकमूल्यऔर राष्ट्रीय मूल्य शिक्षा पर विभिन्न आयोगों और समितियों की सिफारिशों और छात्रों के बीचवैश्विकमूल्यऔर राष्ट्रीय मूल्यों के प्रसार में शिक्षकों की भूमिका का परिचय देता है।

मुख्य शब्द*(Key Words)*:राष्ट्रीय मूल्य, वैश्विक मूल्य,शिक्षक, समानता, समाज,लोकतंत्र।

प्रस्तावना

प्राचीन काल से ही हमारा देश अपनी संस्कृति, मूल्यों और लोकाचार के लिए पूरे विश्व में जाना जाता है। हमारा पौराणिक शिलालेख जीवन के हर क्षेत्र में हमारे स्वागतयोग्य और सहिष्णु स्वभाव का प्रमाण देता है। हम गर्व से कह सकते हैं कि हम उन मूल्यों का हिस्सा हैं जो हजारों-हजारों वर्षों से चले आ रहे हैं। विविधता में एकता भी उन्हीं मूल्यों (भाईचारा, सहिष्णुता और स्वतंत्रता) का परिणाम है।'शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम' के साक्ष्यों पर आधारित एक संरचित कार्यक्रम के रूप में परिभाषित किया गया है जो अनुसंधान और डेटा विश्लेषण के माध्यम से प्रभावी साबित रणनीतियों को शामिल करके भविष्य के शिक्षकों की शिक्षा का मार्गदर्शन करता है। इसका उद्देश्य उम्मीदवारों के सीखने और उनके भविष्य के छात्रों के सीखने के परिणामों के लिए सबसे अच्छा काम करने पर ध्यान केंद्रित करके शिक्षक गुणवत्ता में सुधार करना है।भारतीय शिक्षा आयोग (1964-66) ने नागरिकों के बीच सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को बढ़ावा देने की सिफारिश की है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) में मानव अधिकार कासम्मान, सहिष्णुता, न्याय, जिम्मेदार

नागरिकता, सहयोग, लोकतंत्र में विश्वास और शांतिपूर्ण संघर्ष विनियमन जैसे कुछ प्रकार के मूल्यों को फिर से जोड़ा गया है।राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) ने हमारे राष्ट्र को मूल्यों से समृद्ध बनाने के लिए हिंसा, उत्पीड़न, सांस्कृतिक हठधर्मिता, धार्मिक कट्टरवाद, असहिष्णुता और अंधविश्वास आदि जैसी सभी प्रकार की सामाजिक समस्याओं को दूर करने और समाप्त करने के लिए शिक्षा के निहितार्थ पर जोर दिया।शिक्षक भावी पीढ़ी को अच्छा नागरिक बनाने के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, संस्कृति, मूल्यों को बढ़ावा देने में स्वस्थ भूमिका का निर्वहन करता है।एक आदर्श शिक्षक हमेशा आशावादी, आत्म-प्रेरित और शिक्षण के प्रति जुनूनी होना चाहिए। हमारे देश में, राष्ट्रीय मूल्यों को हमारे समाज के सभी क्षेत्रों में देखा जा सकता है। कक्षा में छात्रों द्वारा प्राप्त अनुभव सीधे स्कूल में शिक्षण-अधिगम अनुभव से जुड़ा होता है।

विभिन्न प्रकार के शोध (एस.विंसेंट डी पॉल, 2012; ए.जे. सेनिवोलिब, 2013; जॉन बैंग्स और डेविड फ्रॉस्ट, 2012; एस. सिडसेल और एस.एम. एइनर, 2009) ने पाया कि शिक्षक की प्रभावकारिता की भावना शिक्षण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता से जुड़ी है, रणनीतियों, प्रेरणा और छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के प्रति रवैया।
शिक्षक की प्रभावशीलता लोकतांत्रिक मूल्यों और शिक्षकों के विश्वास द्वारा समर्थित है (डिप्टी सुब्बा, 2014) में आधुनिक युग में, भारत का सामाजिक-राजनीतिक जीवन विभिन्न चरणों से गुजर रहा है जिससे लंबे समय से स्वीकृत मूल्यों के क्षरण का खतरा पैदा हो गया है।

शिक्षक शिक्षा की अवधारणा

'शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम' को साक्ष्यों पर आधारित एक संरचित कार्यक्रम के रूप में परिभाषित किया गया है जो अनुसंधान और डेटा विश्लेषण के माध्यम से प्रभावी साबित रणनीतियों को शामिल करके भविष्य के शिक्षकों की शिक्षा का मार्गदर्शन करता है।
वर्तमान शिक्षक शिक्षा "एक 'साक्ष्य युग' में है, जहां कार्यों को अनुसंधान, डेटा और सर्वोत्तम अभ्यास की चर्चा में छिपी भाषा के माध्यम से उचित ठहराया जाता है" (हेल्गटुन और मेंटर, 2020, पृष्ठ 2)। धारणा यह है कि अधिक और बेहतर साक्ष्य के साथ "सभी स्तरों पर अभ्यासकर्ता और नीति निर्माता बेहतर निर्णय लेंगे, और शिक्षक की गुणवत्ता में सुधार होगा" (कोचरन-स्मिथ, 2005, पृष्ठ 8)
देश के अधिकांश हिस्सों में शिक्षक शिक्षा दो पहलुओं में संचालित की जाती है: सेवाकालीन शिक्षा या सतत शिक्षा और इसका मुख्य फोकस इस पर है:

i) भावी शिक्षक प्रशिक्षकों में शिक्षक की तैयारी के लिए आवश्यक कौशल और दक्षताओं का विकास करना।
ii) उनके ज्ञान को उन्नत करना और आलोचनात्मक जागरूकता को विकसित करना।
iii) प्रासंगिक विषयों का नवीनतम ज्ञान प्रदान करना।
iv) विस्तार, परीक्षण की क्षमता विकसित करना, विचारों की व्याख्या और संचार।
v) उनमें आजीवन सीखने की इच्छा विकसित करना, उनमें से अनाचारवाद को दूर करना।

शिक्षक शिक्षा की सांस्कृतिक भूमिका के लिए जिम्मेदार हैं। कोई भी राष्ट्र अपने शिक्षकों को आवश्यक पेशेवर इनपुट देने और उसके साथ-साथ उनके कद और पेशे को उचित दर्जा देने में अपने प्रयासों में थोड़ी सी भी

कमी नहीं कर सकता है। ये अपेक्षाएँ बताती हैं कि शिक्षक एक बड़े संदर्भ में काम करता है और इसकी गतिशीलता के साथ-साथ चिंताएँ भी उसके कामकाज पर प्रभाव डालती हैं (पैटेड, 2003)।

वैश्विक मूल्यों की अवधारणा

वैश्विक मूल्य शिक्षा मानव समाज की एकता और परस्पर निर्भरता पर जोर देती है, स्वयं की भावना विकसित करती है और सांस्कृतिक विविधता की सराहना करती है, सामाजिक न्याय और मानवाधिकारों की पुष्टि करती है, साथ ही अलग-अलग समय और स्थानों में स्थायी भविष्य के लिए शांति और कार्यों का निर्माण करती है।छात्रों को बेहतर वैश्विक नागरिक बनने और वैश्विक मुद्दों के बारे में अधिक जागरूकता पैदा करने में मदद करना शिक्षक से ही शुरू होता है। इस कोर्स से पहले, मैं वैश्विक नागरिकता की अवधारणाओं और विषयों से अपरिचित था। इस कोर्स के अंत तक, मैं वैश्विक नागरिकता की शिक्षा को कक्षा अभ्यासों में अनुवाद करने के बारे में अधिक आश्वस्त महसूस करता हूँ।" - जॉन, कनाडा से एक शिक्षक उम्मीदवार, 2021।

"अगर हम अपने छात्रों को दुनिया के मुद्दों के बारे में शिक्षित नहीं करते हैं, तो हम उनसे बड़े होने पर इन मुद्दों को संबोधित करने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं? एक शिक्षक के रूप में, मुझे हमेशा अपने छात्रों को दुनिया की घटनाओं के बारे में बताने की इच्छा थी, लेकिन मैंने इसे सूक्ष्म तरीकों से किया ताकि मुझे बहुत से लोगों को नाराज़ करने के लिए परेशानी न उठानी पड़े। मुझे नहीं लगता था कि मैं वैश्विक नागरिकता के लिए शिक्षा दे रहा हूँ। इस कोर्स ने वैश्विक नागरिकता के लिए शिक्षा देने की मेरी इच्छा और जुनून को मजबूत किया है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अब मेरे पास छात्रों को वैश्विक मुद्दों पर एक सूचित स्थिति से सीखने में मदद करने के लिए भाषा और ज्ञान है" - जूली, कनाडा की एक शिक्षिका, 2020

राष्ट्रीय मूल्यों की अवधारणा

राष्ट्रीय मूल्य एक दार्शनिक अवधारणा है जो प्रत्येक राष्ट्र की विशिष्ट विशेषताओं,संकेतविशेषताओं को व्यक्त करती है और राष्ट्र के सामाजिक विकास की प्रक्रिया में गठित राष्ट्रीय सांस्कृतिक विरासत में योगदान का प्रतिनिधित्व करती है।

केन्या इंस्टीट्यूट फॉर पब्लिक पॉलिसी रिसर्च एंड एनालिसिस (2019) के अनुसार, राष्ट्रीय मूल्य एक राष्ट्र के होते हैंऐसी मान्यताएँ जो उसके नागरिकों के दृष्टिकोण, कार्यों और व्यवहार को निर्देशित करती हैं।

ज़ोल्डोरोवा&खोमिदजोनोवा (2022) राष्ट्रीय मूल्यों को अद्वितीय विशेषताओं, संकेतों और विशेषताओं के रूप में परिभाषित करता है, राष्ट्र के सामाजिक विकास की प्रक्रिया में गठित सांस्कृतिक विरासत में योगदान का प्रतिनिधित्व करते हैं।

उद्देश्य

वैश्विक और राष्ट्रीय मूल्यों की शिक्षा हम सभी की जिम्मेदारी है, न कि सिर्फ स्कूलों की। उदाहरण के लिए, परिवार, विश्वविद्यालय, व्यवसाय और खेल, सभी उन नैतिक सिद्धांतों को सिखाने के लिए आदर्श संदर्भ हैं।पारंपरिक शिक्षा और मूल्य शिक्षा दोनों ही व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक हैं और ये हमें जीवन में हमारे उद्देश्यों को परिभाषित करने में मदद करते हैं।

वैश्विक और राष्ट्रीय मूल्य शिक्षा विभिन्न उद्देश्यों को शामिल करती है :

समानुभूति

संज्ञानात्मक और भावनात्मक रूप से खुद को अन्य लोगों के स्थान पर रखकर, हम संघर्षों को सुलझाने और दूसरों की राय को समझने की अपनी क्षमता में सुधार करते हैं।

समान अवसर

यह सिद्धांत कि हम सभी समान हैं लोकतंत्र के स्तंभों में से एक है, और इसके अलावा यह सामाजिक समावेशन और सामुदायिक जीवन को बढ़ावा देता है।

न्याय

यह सुनिश्चित करता है कि कुछ लोगों की स्वतंत्रता दूसरों के लिए उत्पीड़न न बने। परिणामस्वरूप, वहाँ एक हैवंचित या हाशिए पर रहने वाले समूहों के प्रति शक्ति आवंटन और सहानुभूति की महत्वपूर्ण आवश्यकता।

स्वतंत्रता

संविधान कुछ मौलिक मूल्यों को स्थापित करता है, जैसे विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता।ये मूल्य नए और नवीन विचारों के विकास और मूल्यांकन के लिए आवश्यक हैं जो किसी समाज की मदद कर सकते हैं।

एकता और अखंडता

संविधान का यह पहलू देश को बनाये रखने के लिए आवश्यक हैगरिमा। इस प्रकार, भारत की एकता और राष्ट्रीयता के संरक्षण और संरक्षण पर जोर दिया गया हैएकीकरण से इसके नागरिकों के बीच भाईचारे को बढ़ावा मिलेगा (मलिक, 2019)।

वैश्विक और राष्ट्रीय मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए शिक्षक शिक्षा की व्यापक भूमिका

हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने अपनी पुस्तक "इंडिया, 2020: ए विज़न ऑफ़ द न्यू मिलेनियम" में सही टिप्पणी की है कि "यदि आप किसी भी क्षमता में एक शिक्षक हैं, तो आपको एक बहुत ही विशेष भूमिका निभानी है क्योंकि किसी से भी अधिक अन्यथा यह आप ही हैं जो भावी पीढ़ी को आकार दे रहे हैं।" अपने प्रभाव, भूमिका और कर्तव्यों की दृष्टि से शिक्षक के समान समाज में कोई दूसरा व्यक्तित्व नहीं है।शिक्षक अपने विद्यार्थियों के व्यवहार को अपने कार्य द्वारा प्रदर्शित करता है। एक शिक्षक में छात्रों के व्यवहार को सम्मान, सहयोग, सहिष्णुता, समानता आदि जैसे कुछ मूल्यों के साथ ढालकर उनकी ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में मोड़ने की अपार क्षमता होती है। शिक्षक वैश्विक और राष्ट्रीय मूल्यों को बढ़ाने के लिए कुछ निर्देश दे सकता है।

प्रत्येक व्यक्ति समाज का अभिन्न अंग है। इसलिए, प्रत्येक व्यक्ति के प्रति सम्मान होना चाहिए। शिक्षक छात्रों को जाति, पंथ और जनजाति आदि के बिना अपने सहपाठियों, बुजुर्गों, दोस्तों और पड़ोसियों का सम्मान करने में मदद करने का प्रयास करेंगे।

शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में वैश्विक और राष्ट्रीय मूल्यों को विकसित करने के लिए सह-पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियाँ

सुबह की सभा

सुबह की सभा महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सभी छात्रों और शिक्षकों के बीच अपनेपन और एकता की भावना को बढ़ावा देती है। छात्रों के बीच सर्व-धार्मिक प्रार्थना सभाओं के माध्यम से, यह वैश्विक और राष्ट्रीय मूल्य

एकीकरण, धर्मनिरपेक्षता और आंतरिक शांति को बढ़ावा देता है। राष्ट्रगान गाने से सभी में देशभक्ति की भावना जागृत होती है।

विशेष अवसर का उत्सव

अपने देश की संस्कृति को समझने के लिए पाठ्य सहगामी गतिविधियों के साथ-साथ अन्य महत्वपूर्ण त्योहार भी मनाने चाहिए। इस तरह के उत्सव विविध संस्कृतियों के बीच मजबूत बंधन और मित्रता का निर्माण करते हैं। वैश्विक और राष्ट्रीय मूल्य एकीकरण और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देने के लिए धार्मिक वैश्विक और राष्ट्रीय त्योहार मनाए जाने चाहिए।

विशेष शिविर एवं क्लब गतिविधियाँ

शिक्षकों को एनसीसी, एनएसएस, रक्तदान, चंदा एकत्र करने जैसे शिविर आयोजित करने चाहिएऔर पर्यावरण जागरूकता, साथ ही प्रकृति क्लब, साहित्यिक क्लब और वन्यजीव रोकथाम क्लब जैसी क्लब गतिविधियाँ, छात्रों को एकजुटता, समानता, सहयोग, समन्वय और मानवता की भावना विकसित करने के लिए एक प्राकृतिक वातावरण प्रदान करती हैं।

राष्ट्रीय विषयों पर व्याख्यान

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर शिक्षकों के व्याख्यान यह समझने के लिए कि देश के देशभक्तों द्वारा किए गए बलिदानों के माध्यम से स्वतंत्रता कैसे प्राप्त की गई। उन्हें कई बाधाओं को पार करना पड़ा, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। इस प्रकार का विषय देशभक्ति और देश के प्रति बिना शर्त प्यार के महत्व पर जोर देता है।

महापुरुषों का जन्मदिन मनायें

शैक्षणिक संस्थानों को महान पुरुषों और महिलाओं के जन्मदिन मनाना चाहिए जैसे एम.के.गांधी, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर, मदर टेरेसा और कई अन्य।शिक्षकों को इस बारे में भाषण देना चाहिए कि कैसे इन महान लोगों ने मनुष्यों के बीच समानता और शांति लाने के लिए कड़ी मेहनत की।

प्राकृतिक आपदाओं के दौरान सेवा

बाढ़, सुनामी, भूकंप और सूखे जैसी प्राकृतिक आपदाओं के दौरान, शिक्षकों को अपने छात्रों के साथ स्वयंसेवा करनी चाहिए।

निरक्षरता विरोधी अभियान

छात्रों को अपने शिक्षकों द्वारा निरक्षरता विरोधी अभियानों में शामिल किया जाना चाहिए।

भ्रमण

ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक स्थलों का भ्रमण शिक्षक द्वारा आयोजित किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

भारत को एक अविश्वसनीय देश बनाने के लिए, हमें अपनी युवा पीढ़ी को प्रभावित करने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। एनसीईआरटी सही ढंग से बताता है कि हम जिस प्रकार के व्यक्ति का निर्माण करते हैं, वह हमारे समाज के प्रकार को निर्धारित करता है इसलिए, हमें बच्चों को इसके बारे में शिक्षित करना चाहिएउन्हें खुद को और उनकी पहचान को समझने में मदद करने, राष्ट्रीय एकता सुनिश्चित करने में राष्ट्रीय

मूल्यों का महत्व, और राष्ट्र के प्रति अपनेपन और निष्ठा की भावना को मजबूत करना। शिक्षक प्रासंगिक रहें और अपनी गरिमा बनाए रखें ।शिक्षक शिक्षा को अपने मिशन वक्तव्यों पर फिर से विचार करने की आवश्यकता होगी इस बात पर पुनर्विचार करें कि वैश्विक समुदाय का हिस्सा होने का क्या मतलब है।व्यावसायिक विवरण में, एक शिक्षक भविष्य कापोषण करता है वे पीढ़ी निकट भविष्य में अलग-अलग जिम्मेदारियां संभालेंगी। हम शिक्षक के बारे में महान मंत्र पा सकते हैं हमारा पौराणिक शिलालेख "गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरुदेवो महेश्वर" है। शिक्षक की भूमिका बहुत लचीली होती है, जैसे नियंत्रक, प्रेरक, संसाधन, आयोजक, शिक्षक और मूल्यांकनकर्ता।इस पेपर में देश की भावी पीढ़ी के बीच वैश्विक और राष्ट्रीय मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए शिक्षक के कर्तव्यों की बढ़ती दर के बारे में चर्चा की गई।

संदर्भित ग्रंथ सूची

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति. (1986)। भारतीय सरकार, नई दिल्ली
- कोठारी आयोग. (1964-66)। भारतीय सरकार, नई दिल्ली।
- मलिक, एम.ए. (2019)। K-12 स्तर पर राष्ट्रीय और सामाजिक मूल्यों को विकसित करने में शिक्षा की भूमिका। अंतरराष्ट्रीयइंजीनियरिंग, आईटी और सामाजिक विज्ञान में जर्नल ऑफ रिसर्च, 9(5)।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा। (2005)। भारत सरकार, एनसीईआरटी, नई दिल्ली।
- ज़ोल्डोरोवा, आई.वी., &खोमिदजोनोवा, जी.के.के. (2022)। राष्ट्रीय मूल्य एवं उनकी विशिष्ट विशेषताएँ।संस्कृति और आधुनिकता का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल
- राष्ट्रीय मूल्य और शासन के सिद्धांत: अनुसंधान के माध्यम से सतत विकास का समर्थन करनाक्षमता निर्माण। (2019)। केन्या इंस्टीट्यूट फॉर पब्लिक पॉलिसी रिसर्च एंड एनालिसिस (KIPPRA)
- पैटेड, एल. 2003। 21वीं सदी में शिक्षक शिक्षा और वैश्विक परिवर्तन। ऑथर्सप्रेस. दिल्ली।
- एस.विंसेंट डी पॉल (2012)। शिक्षक आत्म-प्रभावकारिता पैमाने का विकास और सत्यापन। आईओएसआर जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस, खंड-2, अंक-2, पीपी-12-18।
- एस.सिडसेल और एस.एम.इनार (2009)। शिक्षक आत्म-प्रभावकारिता और शिक्षक बर्न आउट: संबंध का एक अध्ययन। खंड-26, अंक 4, पीपी-1059-1069।
- ए.जे.सेनिवोलिबा (2013)। घाना के तमाले महानगर में सीनियर हाई स्कूल में शिक्षक प्रेरणा और नौकरी से संतुष्टि। मेरिट्स रिसर्च जर्नल.वॉल्यूम.1(9),पीपी-181-196।
- जॉन बैंग्स और डेविड फ्रॉस्ट (2012)। शिक्षक आत्म-प्रभावकारिता, आवाज और नेतृत्व: अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा के लिए एक नीतिगत ढांचे की ओर। शिक्षा अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान संस्थान।
- सुब्बा डिप्टी (2014)। शिक्षण में लोकतांत्रिक मूल्य और लोकतांत्रिक दृष्टिकोण: एक परिप्रेक्ष्य। अमेरिकन जर्नल ऑफ शैक्षिक अनुसंधान खंड-2(12ए).पीपी:37-40।
- अब्दुल कलाम, ए.पी.जे.; राजन.वाई.एस. (1998)। भारत 2020: नई सहस्राब्दी के लिए एक दृष्टिकोण। भारत: पेंगुइन पब्लिशर्स। आईएसबीएन-978043423683

Poonam Shodh Rachna